LEO TOLSTOY   लेव टॉल्स्टॉय

THE RIGHTEOUS JUDGE

न्यायप्रिय जज

चित्र: वी. चेलक

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

अल्जीरिया में बावकास नाम का एक शासक था. उसने सुना था कि उसके एक शहर में एक न्यायप्रिय जज रहता था, जो तुरंत सच्चाई को पहचान लेता था और कोई भी दुष्ट उसे धोखा नहीं दे सकता था. बावकास स्वयं इस बात की सच्चाई को परखना चाहता था. इसलिए उसने एक व्यापारी का भेष धारण किया और घोड़े पर सवार होकर उस शहर के लिए रवाना हुआ जहां वो जज रहता था. नगर के प्रवेश द्वार पर एक अपाहिज बावकास के पास आया और वो उससे भीख मांगने लगा. बावकास ने उसे कुछ पैसे दिए. पर जैसे ही वो घोड़े पर चढ़ने वाला था, वैसे ही अपंग ने उसका लबादा पकड़ लिया.

"तुम क्या चाहते हैं?" बावकास ने पूछा. “क्या मैंने तुम्हें भिक्षा नहीं दी?”

“हां, आपने दी,” अपंग ने कहा, “लेकिन मुझ पर एक और उपकार करें, मुझे अपने घोड़े पर बिठाकर चौराहे तक ले चलें, नहीं तो मैं घोड़ों और ऊंटों से कुचल जाऊंगा.”

बावकास ने अपंग को अपने पीछे बैठाया और उसे चौराहे तक ले गया. चौक पर पहुंचकर बावकास ने घोड़ा रोका. लेकिन अपाहिज नीचे नहीं उतरा. बावकास ने कहा:

“तुम वहां अब क्यों बैठे हो? नीचे उतरो, हम चौक पर पहुंच गए हैं.”

लेकिन भिखारी ने कहा:

“मैं क्यों उतरूं, यह तो मेरा घोड़ा है; और यदि तुम यह घोड़ा नहीं छोड़ोगे, तो मैं तुम्हें जज के पास ले जाऊंगा.”

कुछ देर में कई लोग उनके चारों ओर इकट्ठे हो गये और उनकी बहस सुनने लगे. वे सभी चिल्लाये:

"जज के पास जाओ, वो विवाद को सुलझा देगा!"

उसके बाद बावकास और अपंग जज के पास गए. वहां पर पहले से ही कई लोग मौजूद थे. जज ने विवादों को निपटाने के लिए उन्हें बारी-बारी से बुलाया.

बावकास की बारी आने से पहले, न्यायाधीश ने एक विद्वान और एक किसान को बुलाया. वे दोनों एक महिला को लेकर झगड़ रहे थे. किसान कह रहा था कि वो उसकी पत्नी थी, और विद्वान उसे अपनी पत्नी बता रहा था. जज ने उनकी बातें सुनीं, फिर वो एक पल के लिए रुके और उन्होंने कहा:

"महिला को मेरे पास छोड़ जाओ, अब तुम दोनों कल वापस आना."

जब वे चले गए, तो फिर एक कसाई और एक तेल बेचने वाला अन्दर आया. कसाई खून से लथपथ था, और तेल बेचने वाला तेल से. कसाई अपने हाथ में पैसे पकड़े हुए था, और तेल बेचने वाले ने कसाई की एक बांह पकड़ रखी थी. कसाई ने कहा:

“मैंने इस आदमी से कुछ तेल खरीदा और फिर पैसे देने के लिए अपना पर्स निकाला, लेकिन उसने मेरी बांह पकड़ ली और मेरे पैसे छीनने की कोशिश की. और इसीलिए हम आपके पास आए हैं - मेरे हाथ में पर्स है, और उसने मेरी बांह पकड़ रखी है. परन्तु वो पर्स मेरा है, और वो चोर है.”

लेकिन तेल विक्रेता ने कहा:

"यह सच नहीं है. कसाई मेरे पास तेल लेने आया. जब मैंने उसे पूरा जग तेल दिया, फिर उसने मुझसे एक सोने के सिक्के का चिल्लर मांगा. मैंने सिक्के निकालकर काउंटर पर रखे. पर उसने पैसे लेकर भागने की कोशिश की. फिर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे यहां ले आया.”

जज एक पल के लिए रुके और बोले:

"पैसे यहीं छोड़ दो और अब कल वापस आना."

जब बावकास और अपंग की बारी आई, तो बावकास ने जज को पूरी बात बताई. जज ने उसकी बात सुनी और फिर अपंग से उसकी कहानी पूछी. भिखारी ने कहा:

"यह सच नहीं है. मैं अपने घोड़े पर सवार होकर शहर में घूम रहा था, और वो ज़मीन पर बैठा था और मुझसे उसने सवारी की विनती की. मैंने उसे अपने घोड़े पर बिठाया और वो जहां जाना चाहता था, मैं वहां उसे ले गया; परंतु उसने उतरने से इंकार कर दिया और कहने लगा कि वो उसका घोड़ा था. यह बिल्कुल सच नहीं है."

जज ने एक पल सोचा और कहा:

"घोड़ा मेरे पास छोड़ दो और अब कल वापस आना."

अगले दिन जज के फैसले सुनने के लिए बहुत सारे लोगों की भीड़ इकट्ठी हुई.

सबसे पहले विद्वान और किसान आगे आये.

"देखो अपनी पत्नी को ले जाओ," जज ने विद्वान से कहा, "और किसान को पचास कोड़े मारो."

विद्वान अपनी पत्नी को अपने साथ ले गया, और किसान को तुरंत सजा दी गई.

इसके बाद जज ने कसाई को बुलाया.

"वो पैसा तुम्हारा है," उसने कसाई से कहा. फिर उसने तेल बेचने वाले की ओर इशारा करके कहा, "उसे पचास कोड़े मारो."

उसके बाद जज ने बावकास और अपंग को बुलाया.

"क्या तुम लोग अपने घोड़े को बीस अन्य घोड़ों में से पहचान पाओगे?" जज ने बावकास से पूछा.

"जी, मैं वो कर पाऊंगा."

"और तुम?"

अपंग ने कहा, "जी, मैं भी वो कर पाऊंगा."

"फिर मेरे साथ चलो," जज ने बावकास से कहा.

वे अस्तबल में गये. बावकास ने तुरंत अन्य बीस घोड़ों के बीच अपने घोड़े की ओर इशारा किया.

उसके बाद जज ने अपंग को अस्तबल में बुलाया और उसे घोड़ा पहचानने को कहा. अपंग ने भी घोड़े को पहचान लिया और उसकी ओर इशारा किया. उसके बाद जज अपनी सीट पर बैठ गये और उन्होंने बावकास से कहा:

"यह घोड़ा तुम्हारा है, तुम उसे ले जाओ, और अपंग को पचास कोड़े मारे जाएं."

मुकदमे के बाद, जज अपने घर चले गए, लेकिन बावकास उनके पीछे-पीछे चला.

"क्या बात है? क्या आप मेरे फैसले से खुश नहीं हैं?" जज ने पूछा.

"मैं आपके फैसलों से बहुत खुश हूं." बावकास ने कहा, "लेकिन मैं यह जानना चाहता हूं कि आपको यह कैसे पता चला कि वो महिला, विद्वान की पत्नी थी, किसान की नहीं; वो पैसा कसाई का था, तेल बेचने वाले का नहीं; और घोड़ा मेरा था, अपंग का नहीं."

"मुझे महिला के बारे में इस तरह पता चला: सुबह मैंने उस महिला को अपने पास बुलाया और मैंने उससे अपनी स्याही की दवात में स्याही भरने को कहा. उसने दवात उठाई, उसे जल्दी से धोया, और चतुराई से उसमें स्याही भरी. जाहिर तौर पर वो ऐसा करने की आदी थी. यदि वो किसान की पत्नी होती तो वो ऐसा नहीं कर पाती. तो, विद्वान सही था... मुझे पैसों के बारे में इस तरह पता चला: मैंने उन सिक्कों को एक कप पानी में डाल दिया और आज सुबह मैं यह देखने गया कि पानी की सतह पर कोई तेल था या नहीं. यदि पैसा, तेल बेचने वाले का होता, तो तेल उसके हाथों से सिक्कों में ज़रूर लगता. पानी में कोई तेल नहीं था, तो जाहिर था कि कसाई सच कह रहा था... घोड़े के बारे में पता लगाना कुछ अधिक कठिन था. अपंग और आप दोनों ने तुरंत अन्य बीस घोड़ों में से सही घोड़े की ओर इशारा किया. परन्तु मैं आप दोनों को अस्तबल में यह देखने के लिये नहीं ले गया था कि आप घोड़े को पहचान पाते हैं या नहीं, परन्तु यह देखने के लिए कि घोड़ा आप में से किस को जानता और पहचानता था. जब आप घोड़े के पास गए, तो उसने अपना सिर घुमाया और आपकी ओर कुछ आगे बढ़ा; परन्तु जब अपंग ने उसे छुआ, तो घोड़े ने अपने कान चपटे कर लिए और अपना पैर ऊपर उठाया. इससे मुझे पता चल गया कि घोड़े के असली मालिक आप ही थे."

तब बावकास ने कहा:

“मैं कोई व्यापारी नहीं हूं, बल्कि शासक बावकास हूं. मैं यहां यह देखने आया था कि आपकी न्यायप्रियता के बारे में जो कहा जाता था वो वाकई में सच था या नहीं. अब मैं देख रहा हूं कि आप वाकई में एक बुद्धिमान जज हैं. आप जो भी चाहें मुझसे मांगें और मैं आपको वो इनाम दूंगा.”

जज ने कहा, "महाराज, मुझे कोई इनाम नहीं चाहिए...."